International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-2, Issue-4 August- 2015
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

लोक नायक जयप्रकाश नारायण का शिक्षा दर्शन

शर्मिला रानी
शोधार्थी
मेवाड़ विश्वविद्यालय

डॉ ए0 बी0 भटनागर
शिक्षा विभाग
रीडर एवं विभागाध्यक्ष

शोधसाराश
लेकनायक जयप्रकाश नारायण भारतवर्ष के महान समाजवादी चिन्तको में से उक हैं। इनकी भारतीय स्वंतंत्रता आन्दोलन में महत्वपूर्ण सक्रिय भूमिका रही एवं स्वंतंत्रता उपरान्त इन्होने सन् 1954 में राजनिति त्याग कर अपना सम्पूर्ण जीवन सामाजिक पुर्निर्माण हेतु समर्पित कर दिया इनके विचारों का प्रभाव शिक्षा पर भी पडा।

लोक नायक जयप्रकाश नारायण का शिक्षा दर्शन
इनका शिक्षा चिन्तन समाज की आवश्यकताओं उवं हितों पर आधारित है जो आज के समय की मांग भी है। इन्होने शिक्षा के लगभग सभी पक्षों पर अपने विचार प्रस्तुत किये तथा शिक्षा में आमूल–चूल परिवर्तन पर विशेष बल दिया। उनके अनुसार शिक्षा ऐसी होनी जो सामाजिक आवश्यकताओं के अनुकूल हो तथा जीवनपयोगी हो, तथा साथ ही लोगों को आत्मनिर्भर बनायें।
भारत में जो प्रमुख समाजवादी चिंतक हुए उनमें जसप्रकाश नारायण का नाम प्रमुख रूप से आता है जिन्हे लोग लोकनायक भी कहते है तथा जिन्होंने समाजिक पुर्निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई एवं भारतीय शिक्षा को प्रभवित किया। जयप्रकाश नारायण का चिन्तन किसी एक किचार से नहीं बंधा रहा बल्कि साम्यवाद, तदोपरान्त सर्वोदय से होता हुआ सम्पूर्ण क्रान्ति में प्रस्फुटित हुआ। इन्होने सोशलिस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट ग्राम पाठशाला, लेबर कॉलेज की स्थापना के विचार रखे तथा गांधी अध्ययन संस्थान की स्थापना की। इनके शैक्षिक विचारो का प्रभाव आचार्य राममूर्ति कमीशन के सुझावों पर भी पडा। ऐसे में बहुत आवश्यक हो जाता है कि उनके शिक्षा दर्शन के आधार पर सुधार किया जायें जो भारतीय शिक्षा को एक नई दिशा दे सके।

शिक्षा :– जयप्रकाश नारायण के अनुसार शिक्षा, चरित्र निर्माण व्यक्तित्व विकास हेतु एक प्रमुख उपकरण है तथा मनुष्य की क्षमताओं में वृद्धि करने का साधन है, जिससे मनुष्य स्वयं को एक अच्छा मनुष्य बना सके।

शिक्षा का उददेष्यः– जयप्रकाश नारायण ने शिक्षा के उददेश्य का समाज के उददेश्यों और उसकी आवश्यकताओ में जोडा। इनके अनुसार शिक्षा का उददेश्य समाज की आवश्यकताओं से जुडा हुआ होता है। उसे पूर्व निश्चित नहीं किया जा सकता। इसलिए उन्होने शिक्षा के उददेश्य को पूर्व निश्चित न करते हुए सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप परिवर्तनशील माना एवं सामाजिक उददेश्यों के संदर्भ में शिक्षा के उददेश्य को रेखांकित किया।

पाठ्यचार्यः– जयप्रकाश नारायण ने शिक्षा की पाठ्यचार्य को भी समाज की आवश्यकता के अनुरू निर्मित करने पर बल दिया। उन्होंने पाठ्यचार्य को ग्रामीण उन्मुख एवं अनुभव आधारित बनने पर बनल दिया। उनके अनुसार शहरी शिक्षा से समान ग्रामीण शिक्षा नहीं होनी चाहिए बल्कि ग्रामीण शिक्षा की रूपरेखा शहरी शिक्षा से भिन्न होनी चाहिए जो ग्रामीण परिस्थितियों में वहां के लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायक हो।
जयप्रकाश नारायण ने पाठ्यचार्य में मात्र भौतिक शिक्षा को ही समिमलित नही किया बल्कि आध्यात्मिक शिक्षा को भी सम्मिलित किया क्योकि उनके अनुसार बिना आध्यात्मिक शिक्षा के भौतिक शिक्षा समाज हेतु खतरनाक हो सकती है। जयप्रकाश नारायण ऐसी पाठ्यचार्य चाहते थे जो व्यक्ति को आत्मनिर्भर नाये। वह ऐसी पाठ्यचार्य के पक्ष में बिल्कुल नही थे जो छात्र को नौकरी के लिए भटकने पर विवश करे। इसलिए उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति के लिए इंटरमीडिएट टैक्नोलोजी के प्रशिक्षण का विचार प्रस्तुत किया जो उन्हे आत्मनिर्भर बनाये एवं उनमें श्रम के प्रति श्रद्धा भी उत्पन्न करें।

शिक्षण विधिः– जयप्रकाश नारायण ने शिक्षण हेतु ऐसी विधि को अपनाने पर बल दिया जिसमें सीखनें वाला अपने स्वयं के अनुभव का ज्यादा – से – ज्यादा प्रयोग कर सके तथा उसके स्वयं के क्रियाकलापों पर केंन्द्रित हो। इसलिए उन्होंने ऐसी शिक्षण विधियों के प्रयोग की बात कही जिसमें छात्र स्वयं के अनुभव के आधार पर तथ्यों को वास्तविक रूप में समझ सके। उन्होंने मुख्यतः पिम्पलिखित शिक्षण विधियों का उल्लेख किया जिनका प्रयोग शिक्षण में करना चाहिए – शोध विधि, अन्तर्सूझ विधि, क्रियाकलाप विधि, अनुभव व चर्चा विधि इत्यादि। जयप्रकाश नारायण ने उपर्युक्त जिप शिक्षण विधियों का उल्लेख किया यदि उनका प्रयोग किया जाए तो ज्ञानात्मक स्तर से आगे बढकर बाधात्मक, अनुप्रयोगात्मकए विश्लेषणात्मक, संश्लेषणात्मक तथा मूल्यांकन स्तर उददेश्य को सरलता एवं प्रभावशाली ढंग से पूर्ण किया जा सकता है।

शिक्षा का माध्यमः– जयप्रकाश नारायण ने इस संदर्भ में मातृभाषा का पक्ष लिया परंतु इसे अपनाने के पीछे बहुत महत्वपूर्ण तर्क भी प्रस्तुत किया। उनके अनुसार मातृभषा ही शिक्षा का सशक्त माध्यम हो सकती है कोई अन्य विदेशी भाषा में नही क्योकि काई भी सृजनातमक लेखन सिर्फ मातृभाषा में ही संभव है, विदेशी भाषामें सिर्फ दूसरे की नकल की जा सकती है। उन्होंने रविन्द्रनाथ टैगोर जैसे व्यक्तियो का उदाहरण देते हुए तर्क भी दिया कि इनका सृजनातमक लेखन में संभव हो सका, जबकि उन्हें विदेशी भाषा का भी ज्ञान था।

शिक्षकः– जयप्रकाश नारायण ने शिक्षकों की राष्ट्र निर्माण एवं सामाजिक पुनिर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया। इसलिए शिक्षक को अपने दैनिक लीवन में नैतिकता का कडाई से पालन करना चाहिए, इसके साथ ही उसके अंदर अपने कतृव्य एवं कार्य के प्रति समपर्ण भाव का होना भी आवश्यक है। उनका मत यह था कि शिक्षक को शिक्षण तकनीकी योगयता तथा कौशल में निपुण होना चाहिए तथा उसके अंदर वैज्ञानिक अभिवृत्ति विकसित होना चाहिए। शिक्षक शिक्षा का महत्वपूर्ण अंग होता है।

विद्यालयः– जयप्रकाश नारायण ने विद्यालय को किसी भी अन्य संस्था से ज्यादा महत्वपूर्ण बताया। उनके अनुसार विद्यालय किसी भी संस्था या असेंबली या राजनीतिक पार्टी से ज्यादा महत्वपूर्ण है।

अनुशासनः– जयप्रकाश नारायण किसी बाह्य अनुश्सन को ज्यादा प्रभावश्ली न मानते हुए स्वअनुशासन को बेहतर मानते थे। जयप्रकाश नारायण का स्वअनुश्सन वर्तमान समय की मांग है।

स्त्री शिक्षाः– जयप्रकाश नारायण ने महिलाओं की शिक्षा पर भी विशेष ध्यान दिया। उन्होंने कहा कि महिलाऐं भी अपने दलित वर्ग है, उनको भी बहुत बातों की स्वतंत्रता नहीं है। वह स्त्री शक्ति को जगाना चाहते थे, उनके लिए भी स्वतंत्रता चाहते थे। उन्होने स्त्रियों को भी पुरूषों के समान शिक्षा देने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि शिक्षा और रोजगार के क्षेत्र में पुरूषों और महिलाओं में कोई फर्क नहीं होना चाहिए, हर तरह से महिलाओं को समानता का व्यवहार मिलना चाहिए।

निष्कर्षः– इस प्रकार जयप्रकाश नारायण ने शिक्षा को सामाजिक आवश्यकताओं एवं हितों के संदर्भ में प्रस्तुत किया। उन्होने शिक्षा के उददेश्य, पाठ्यचार्य, शिक्षा का माध्यम, शिक्षण विधि, शिपक्षक, छात्र, अनुश्सन एवं स्त्री शिक्षा इत्यादि को व्यवहारिकता की कसौटी पर सफलतापूर्वक रखा तथा सामाजिक आवश्यकताओं के अनुसार हर तरह के परिवर्तन पर बल देते हुए शिक्षा व्यवस्था में सुधार पर जोर दिया जो वर्तमान परिपेक्ष्य में ज्यादा प्रासंगिक प्रतीत होते है।

संदर्भ

ग्रोवर, विरेन्द्र(सम्पा),1991. मैसेज टू द नेशन–जयप्रकाश नारायण, नयी दिल्ली– दीप एंड दीप पब्लिकेश्न. बसु, दुर्गादास. 1998. भारत का संविधान– एक परिचय, नयी दिल्ली– प्रेंटिस हाल ऑफ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड. नारायण, जयप्रकाश . 1996. एजुकेशनल आइडियन्स एंड ऑफ पीस, तन्जावपुर–सर्वोदय प्रचुराल्या.
2003. जयप्रकाश नारायण सलेक्टेड वर्क वो.–4, नयी दिल्ली– मनोहर पब्लिाशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स. शरण त्रिपुरारी. जयप्रकाश नारायण के शिक्षा चिंतन के संदर्भ में शर्मिला रानी द्वारा शरण का लिया गया साक्षत्कार (अप्रकाशित साक्षत्कार), पटना, 28 जून 2008.
शाह, कान्ति 2002. जयप्रकाश की जीवन–यात्रा, वाराणसी–सर्व सेवा संघ प्रकाशन.